• Book, Edited Books & Chapters Publications

Name of Faculty	Dr. Akshay Bhosale
Name of Department	Hindi
Academic Year	2023 -2024

Sr. No.	**Name of Book**	**Publication**	**Page No**
1.	Abhikalanatmak Bhasha Vigyan aur padcchedan	A R Publishing company, Dilli	01 t0 134
2.	Kunvar Narayan ke khandakavy visheshan aur kriya ki drushti se adhyayan	A R Publishing company, Dilli	01 to 236

अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान और पद्च्छेदन

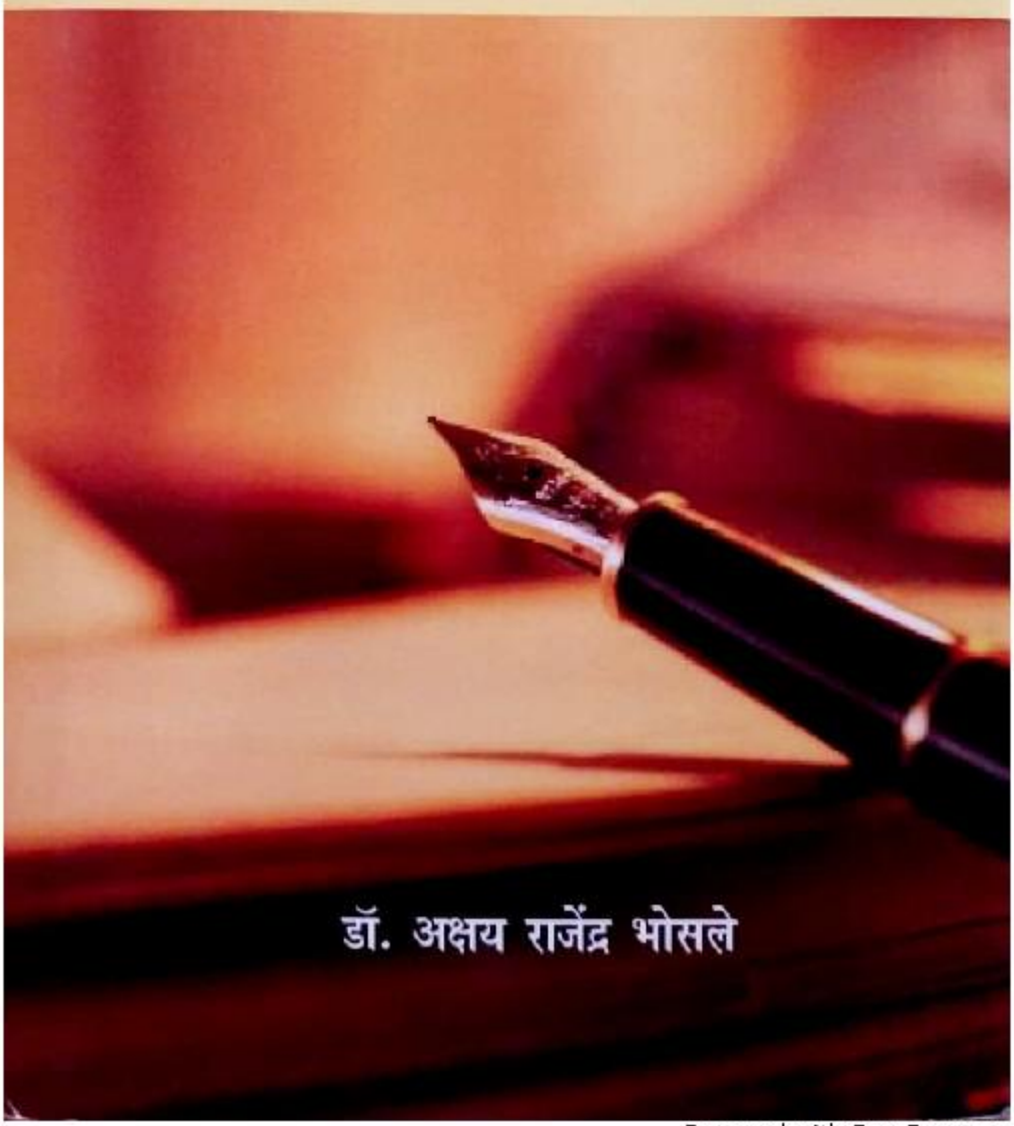

डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले

Scanned with CamScanner

अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान
और
पद्‍च्छेदन

डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी
दिल्ली

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी

के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
फोन : 9968084132, 7982062594
e-mail : arpublishingco11@gmail.com

ABHIKALNATMAK BHASHAVIGYAN AUR PADCHCHHEDAN
by Dr. Akshay Rajendra Bhosale

ISBN . 978-93-94165-26-7
Linguistics

© लेखकाधीन

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 350

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

पुस्तकायन

गणना की सुलभता एवं शीघ्रता हेतु संगणक का निर्माण किया गया। गणितीय क्रियाओं की सूत्रबद्धता एवं भाषिक प्रयोग की व्याकरणिक सूत्रबद्धता अर्थात् सैद्धांतिकता के आधार पर भाषिक सॉफ्टवेयर का निर्माण हुआ। यह उपलब्धि एक अविष्कार से कम न थी। फलतः ज्ञान की नुतन शाखा 'अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान' का जन्म हुआ और 'प्राकृतिक भाषा संसाधन' को ज्यादा महत्त्व प्राप्त हुआ। व्याकरण का जन्म भाषा की पद्च्छेदन प्रकिया का औचित्य है। पद्च्छेदन से प्राप्त धृति (Data) वह बीज है जिसकी बुआई कर मनचाहे भाषिक सॉफ्टवेयर्स की फसल उगा सकते हैं। अतः संगणक और उसके भाषिक अनुप्रयोग में रुचि रखने वाले जिज्ञासुओं के लिए यह पुस्तक लाभदायक सिद्ध होगी।

–डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले

अनुक्रम

पुस्तकायन 7

भूमिका 9

1. हिंदी व्याकरण 13
2. अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान 30
3. अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान : स्वरूप एवं परिभाषा 31
4. प्राकृतिक भाषा 36
5. प्राकृतिक भाषा संसाधन 38
6. अ-प्राकृतिक भाषा 41
7. अभीष्ट भाषिक उत्पाद हेतु प्राकृतिक भाषा और अ-प्राकृतिक भाषा का अंतःसंबंध 47
8. अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान : उद्देश्य 49
9. अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान : उत्पाद 50
10. व्याकरण और अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान का अंतःसंबंध 55
11. पदच्छेदन का स्वरूप 58
12. डाटा निर्माण : परिचय 79
13. 'आत्मजयी' में अभिव्यंजित विशेषणों का अभिकलन साधित पदच्छेदन 85
14. 'आत्मजयी' में अभिव्यंजित 'क्रिया' का अभिकलन साधित पदच्छेदन 111

संदर्भ 134

1. हिंदी व्याकरण

हिंदी व्याकरण : स्वरूप

आज हिंदी भाषा विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। वैश्विक स्तर में इस भाषा ने तकनीकी क्षेत्र में भी अपने पैर जमाए हैं। हिंदी भाषियों की संख्या भारत के साथ विविध राष्ट्रों में पाई जाती है। विद्वानों के मतानुसार कोई भी भाषा जब विविध-विषयों और क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है, तो विषय या क्षेत्र की माँग के अनुरूप उस भाषा में विकास या परिवर्तन आता है। उसमें नयापन या विशिष्टता आती है। उसका रूप बदलता है। 'हिंदी' भाषा के साथ भी ऐसा ही हुआ प्रतीत होता है। यह भाषा समय और युग की माँग के अनुरूप अपना विकास करती गई है। व्याकरण ऐसी चीज है, जो भाषा के साथ बदलती रहती है और भाषा के ही अधीन होती है। डॉ. राजेश्वर गुरु कहते हैं, ''व्याकरण के संदर्भ में यह बात स्मरण रखने योग्य है कि भाषा को नियमबद्ध करने के लिए व्याकरण नहीं बनाया जाता, वरन् भाषा पहले बोली जाती है और उसके आधार पर व्याकरण की उत्पत्ति होती है।''[1] हिंदी भाषा के उद्‌भव और विकास के अध्ययनोपरांत स्पष्ट होता है कि इस भाषा में समय के साथ अनेक परिवर्तन हुए हैं। हिंदी भाषा निरंतर विकास की ओर बढ़ती रही है। हिंदी भाषा के व्याकरण पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि उसका व्याकरण लिखने का प्रथम प्रयास भारतीयों द्वारा नहीं, बल्कि विदेशियों द्वारा हुआ है। 'हिंदी व्याकरण का स्वरूप' जानने से पूर्व हम हिंदी व्याकरण का प्रारंभ एवं उसके विकास पर दृष्टि डालते हैं।

अ. क्र.	वैयाकरण	किताब का नाम
i.	जोहन जोशुआ केटलर	हिंदुस्तानी ग्रामर (चौतीस पृष्ठ) सन् 1595-1697 ई के बीच। (डच भाषा में – रोमन लिपि में) दाविद मिल ने इसका लैटिन अनुवाद किया, सन् 1743 ई में।
ii.	पादरी शुल्से	ग्रामेटिका हिंदास्तानिका - सन् 1944 ई. (लैटिन भाषा में लिखित)
iii.	जॉर्ज हाडले	i. ग्रामेटिकल रिमार्क्स ऑफ द प्रैक्टिकल एंड वल्गर डायलेक्स

		ऑफ द इंदोस्तान लैंग्वेज, कौमनली कॉल्ड मूर्स, विथ ए वोकेबुलरी इंगलिश एंड मूर्स- 1772 ई. ii. ए शॉर्ट ग्रामर ऑफ द मूर्स लैंग्वेज - सन् 1779 ई.
iv.	जॉन बोर्थविक गिलक्राइस्ट	i. ए ग्रामर ऑफ द हिंदुस्तानी लैंग्वेज -1796 ई. ii. द ओरिएंटल लिंगविस्टिक-सन्1798 ई. iii. स्ट्रैंजर्स ईस्ट गाइन टु हिंदुस्तानी - सन् 1802 ई.
v.	जॉन शेक्सपियर	i. ए ग्रामर ऑफ द हिंदुस्तानी लैंग्वेज - सन् 1813 ई. ii. ऐन इंट्रोडक्शन टु द हिंदुस्तानी लैंग्वेज' - सन् 1845 ई.
vi.	कैप्टेन विलियम प्राइस	हिंदुस्तानी ग्रामर - सन् 1827-28 ई.
vii.	विलियम येट्स	इंट्रोडक्शन टु द हिंदुस्तानी लैंग्वेज - सन् 1828 ई.
viii.	एम. टी. आदम	हिंदी भाषा का व्याकरण- सन् 1828 ई. (हिंदी भाषा में प्रथम व्याकरण)
ix.	विलियम एड्डि	ऐ कंप्रेहेंसिव सिनॉपसिस ऑफ द एलीमेंट्स ऑफ हिंदुस्तानीग्रामर- सन् 1830 ई.
x.	सैंडफोर्ड अर्नोट	हिंदुस्तानी ग्रामर - सन् 1831 ई.
xi.	गार्सा द तासी	रुडिमेंट्स डिला लैंगुए हिंदुस्तानी – सन् 1839 ई.
xii.	डंकन फोर्बेस	i. हिंदुस्तानी मैनुअल – सन् 1845 ई. ii. ए ग्रामर ऑफ द हिंदुस्तानी लैंग्वेज –1846 ई.
xiii.	ई. बी. इस्टवीक	ए कनसाइझ ग्रामर ऑफ द हिंदुस्तानी लैंग्वेज- सन् 1847 ई.
xiv.	अलेक्जेंडर फौकनर	द ओरिएंटेलिस्टस ग्रामेटिकल वाडे-मेकम - सन् 1853 ई.
xv.	सर मोनियर विलियम्स	i. ए प्रैक्टिकल हिंदुस्तानी ग्रामर - सन् 1862 ई. ii. रुडिमेंटस ऑफ हिंदुस्तानी ग्रामर - सन् 1858 ई.
xvi.	पं. श्रीलाल	भाषा चंद्रोदय – सन् 1855 ई.
xvii.	पं. रामजसन	भाषा तत्वबोधिनी – सन् 1858 ई.

xviii.	नवीन चंद्रराय	नवीन चंद्रोदय – सन् 1890 ई.
ixx.	अंबिकाप्रसाद वाजपेयी	हिंदी कौमुदी – सन् 1919 ई.
xx.	पं. कामताप्रसाद गुरु	हिंदी व्याकरण– सन् 1921 ई.
xxi.	डॉ. रामचंद्र वर्मा	i. अच्छी हिंदी – सन् 1944 ई. ii. हिंदी प्रयोग – सन् 1946 ई. iii. मानक हिंदी व्याकरण – सन् 1961 ई.
xxii.	पं. किशोरीदास वाजपेयी	i. राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण. ii. अच्छे हिंदी का नमूना – सन् 1948 ई. iii. हिंदी निरुक्त – सन् 1949 ई. iv. हिंदी शब्द निर्णय – सन् 1955 ई. v. हिंदी शब्द मिमांसा – सन् 1958 ई. vi. हिंदी शब्दानुशासन – सन् 1958 ई.
हिंदी वैयाकरण के रूप में उक्त विद्वानों का योगदान निश्चित ही सराहनीय है।		

विद्वानों के मतानुसार हिंदी व्याकरण के संदर्भ में विशेष महत्त्व कैप्टेन जॉन फरगूसन का है। सन् 1773 ई. में लंदन से प्रकाशित 'हिंदुस्तानी भाषा का कोष' ग्रंथ में फरगूसन ने 38 पृष्ठों में हिंदुस्तानी भाषा का व्याकरण लिखा। ये उस वक्त लिखा गया, जब हिंदी के पास नाममात्र यानी एक-दो व्याकरण की किताबें ही उपलब्ध थी। इसके बाद हिंदी-व्याकरण लिखने का सिलसिला आरंभ हुआ। पहले हिंदी भाषा को एक अशिष्ट बोली के रूप में देखा जाता था, किंतु बाद में गिलक्राईस्ट ने स्वीकार किया कि हिंदी बर्बर एवं अशिष्ट बोली नहीं, अपितु एक शिष्ट और समृद्ध भाषा है, जिसका व्यवस्थित व्याकरण लिखा जा सकता है। अतः व्याकरण के साथ 'इंगलिश-हिंदुस्तानी' कोश निर्माण कार्य इन्होंने किया। 'हिंदी-व्याकरण और प्रमुख वैयाकरण' में लिखा है, "आदम साहब प्रथम विदेशी वैयाकरण थे, जिन्होंने न केवल हिंदी भाषा में प्रथम व्याकरण लिखा, अपितु हिंदी का पहला कोश भी लिखा और जिन्होंने हिंदुस्तानी, हिंदुई आदि के बदले 'हिंदी' शब्द का प्रयोग किया।" धीरे-धीरे उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक देशी-विदेशी विद्वानों ने हिंदी-व्याकरण पर विविध ग्रंथ लिखे। आगे 21वीं शती के आरंभ तक यह कार्य अपने चरम बिंदू पर है। हिंदी व्याकरण के ग्रंथ सृजन में अनेक विद्वानों का योगदान हैं, जिनमें से कुछ वैयाकरण निम्नांकित हैं-अमृतलाल दास, शिवनारायण लाला, डॉ. भोलानाथ तिवारी, श्रीनारायण चतुर्वेदी, शिवनारायण झा, देवीप्रसाद वर्मा, बलदेवप्रसाद, भगवानदीन,

Scanned with CamScanner

डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले

डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले

जन्म : 08 अगस्त, 1991, कदमवाडी, करवीर (तहसील), कोल्हापुर (जिला), महाराष्ट्र

शिक्षा : सेट (हिंदी), एम.ए. हिंदी (भाषा प्रौद्योगिकी), अनुवाद पदविका, संगणक तथा भारतीय भाषा सॉफ्टवेयर्स अनुप्रयोग पदविका।

Diploma in Computer Application

प्रकाशन : राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय विविध पत्र-पत्रिकाओं में शोध निबंध प्रकाशित।

विशेष : अनेक राज्यस्तरीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध निबंध प्रस्तुति एवं सक्रिय सहभाग, विविध कार्यशाला, केंद्र शासकीय एवं शासकीय, विविध संस्था आदि में विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित।

ब्लॉगर के रूप में सक्रिय : हिंदी साहित्य और भाषा प्रौद्योगिकी
http://www.blogger.com/profile/04242142440219934814

यू-ट्यूबर के रूप में सक्रिय : 'AkshayGyan'.
https://youtu.be/2LoIu6G9STU

संप्रति : अभ्यागत अध्यापक, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) - 416004।

संपर्क : घर नं. 137, गणेश गली, कदमावाडी, करवीर (तहसील), कोल्हापुर (जिला), महाराष्ट्र-416003।

भ्रमणध्वनि : 9022621706, 8805791792

ई-मेल : akshaybosale@gamil.com